अनिरुद्ध प्रसाद 21
हिन्दी - विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा।

पत्र (1)

20.07.20

प्रश्नः कामायनी की श्रद्धा का चरित्रांकन कीजिए।

'कामायनी' महाकाव्य की नायिका श्रद्धा है इस महाकाव्य का नामकरण भी उसी के आधार पर किया गया है। महाकाव्य की सभी प्रमुख घटनाएँ तथा कार्य-कलाप श्रद्धा के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर ही घटित होते हैं। एक तरह से संपूर्ण घटनाओं के मूल में वही स्थित है। कहा जा सकता है कि प्रसाद जी ने श्रद्धा के चरित्र को गरिमामय और आदर्श से परिपूर्ण बनाया है। उसमें स्नेह, ममता, करुणा और विश्वास का अजस्र स्रोत बहता है तथा वह अलौकिक सौन्दर्य की प्रतिमा है। नारी के रूप में श्रद्धा भौतिक जीवन की एषणाओं से सम्बद्ध होती हुयी भी आध्यात्मिकता को नहीं भूलती। अंत में वह मनु का उद्धार भी करती है।

ऋगवेद में श्रद्धा को कामगोत्र की बालिका माना गया है — 'कामगोत्रजा श्रद्धानामर्षिका'

'कामगोत्रजा होने के कारण ही उसे कामायनी भी कहा गया है। श्रद्धा का चरित्र अपने आप में एक विशेषता लिए हुए है। वह केवल मनु की पत्नी ही नहीं बल्कि सृष्टि के विकास का मूलाधार भी है। सृष्टि के विकास के लिए मानवता का प्रवर्तन के लिए वही मनु को कर्मवाद की ओर प्रेरित करती है। वह मनु को सृष्टि और जीवन का रहस्य समझाती है और कहती है कि तप ही जीवन है। भोगवाद तथा आनंद ही जीवन का उद्देश है।

जब मनु यज्ञ के बहाने हिंसक प्रवृत्ति की ओर आकृष्ट होता है तब वह मनु को हिंसा करने से रोकती है। वह मनु को उच्च आदर्श की ओर ले जाने का प्रयत्न करती है। परन्तु मनु अपनी स्वार्थ-सीमाओं के कारण श्रद्धा की बातों में कोई रुचि नहीं लेता है। वह छोटे-छोटे आमोदों में लीन होता चला जाता है। यहाँ तक कि श्रद्धा के गर्भवती

मनु को वह जीवन का संदेश देती है। वह मनु से कहती है — जिस जीवन को तुम अभिशाप समझते थे, वह तो जीवन का वरदान है। मनु को कर्म का संदेश देकर वह समरसता का पाठ पढ़ाती है —

एक तुम यह विस्तृत खण्ड
प्रकृति के वैभव से भरा अमंद
कर्म भोग, भोग का कर्म
यही जड़-चेतन का आनंद।

श्रद्धा की करुणा तथा कल्याण की भावना केवल परिवार तक सीमित नहीं है, वह संपूर्ण विश्व को आनंदमय देखना चाहती है। उसकी करुणा निरीह पक्षी, पशु तथा पेड़-पौधों तक में समाहित है। इसलिए मनु द्वारा पशुओं की बलि का वह विरोध करती है।

श्रद्धा की दृष्टि अत्यन्त व्यापक है। मनु के प्रेम में वह विह्वला नारी नहीं है। वह एक आदर्श गृहणी है जो मनु से वियोग की बेला में भी पराजय स्वीकार नहीं करती। वह रोती, कलपती नहीं है बल्कि व्यावहारिक जगत में आने वाले मानव के लिए एक झूला डाल देती है। वह एक सुंदर कुटी का निर्माण करती है, तकली चलाकर ऊन की पट्टियाँ बनाती है। श्रद्धा के इस विधान पर मनु स्वयं चकित है।

भारतीय नारी की पूर्णता मातृत्व है, श्रद्धा यह जानती है। भावी शिशु मानव की वह संरक्षिका है। वह अपनी वात्सल्य भावना का प्रसार पशु-पक्षी तक कर देती है। अपने आंतरिक गुणों से विभूषित होने के साथ ही वह शारीरिक सौंदर्य में भी अद्वितीय है। उसके रूप-राशि मनु को इंद्रजाल की भाँति प्रतीत होते हैं। उसके स्वर में भ्रमरी का मधुर गुंजन है। वह नित्य नव-यौवना है। प्रसाद जी ने सही अर्थों में श्रद्धा के रूप में सौंदर्य को साकार कर दिया है। उसके प्रथम दर्शन में ही मनु श्रद्धा का भक्त बन जाता है।

इस प्रकार श्रद्धा के चरित्र में स्वाभिमान है, उसमें गुरुत्वाकर्षण है, करुणा की भावना है, वह सर्व-गुण संपन्न एक आदर्श भारतीय नारी है। उसमें शील, क्षमा, औदार्य और ममता के सभी गुण विद्यमान हैं।

PG. Semester-II
CC-10
Shraddha ka charitra

न [illegible] उसे छोड़कर चला जाता है। किंतु श्रद्धा ऐसी आदर्श नारी है कि वह मनु की निष्ठुरता का भी प्रतिरोध नहीं करती। उसे मनु पर क्रोध भी नहीं आता, वह मनु को उपालंभ भी नहीं देती बल्कि प्रेम में प्रतिदान की भावना को स्वीकार करती है। वह कहती है कि प्रतिदान में ही विजय है। प्रकृति का यही व्यापार है। वास्तव में श्रद्धा के रूप-चित्रण में प्रसाद जी के व्यक्तित्व की छाप भी दृष्टिगोचर होती है। डा० भगीरथ मिश्र ने ठीक ही कहा है — "इसे हम प्रसाद के जीवनानुभव और चिन्तन की विशेष उपलब्धियों का सप्राण बिम्ब भी कह सकते हैं। प्रेम की शालीनता वेदनानुभूति की विराटता, आशा एवं विश्व मंगल की व्यापक कामना, जीवन के प्रति अटूट निष्ठा, सहिष्णुता, त्याग, अदम्य उत्साह, कर्तव्य परायणता तथा सरल हृदय की उच्चाशयता आदि गुणों का प्रतिफलन है।

श्रद्धा एक आदर्श पत्नी है। किंतु पति का वियोग बर्दाश्त नहीं कर पाती। मुरझाकर पीली हो जाती है। वह स्वप्न में मनु को इड़ा की ओर झुका देखती है तब उसका पतिव्रत धर्म जाग उठता है। और वह शिथिल शरीर लिए अंधकारपूर्ण रात्रि में व्याकुल मनु की सेवा करने निकल पड़ती है। क्योंकि मनु वहाँ अनाचार, देव प्रकोप एवं जनरोष का शिकार होता है। वहाँ श्रद्धा उसे सांत्वना देती है, निःस्वार्थ सेवा करती है और पति धर्म का पालन करती है।

श्रद्धा बहुमुखी प्रतिमा की स्वामिनी है। एक तरफ उसके हृदय में अजस्र करुणा की धारा बहती रहती है तो दूसरी ओर वह लोगों की सेवा में अपना तन-मन अर्पित कर देती है। जैसे दूसरों की भलाई करना ही उसके जीवन का उद्देश्य है। विषाद में लीन